Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 20

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

21 जुलाई 2016 ई

15 शव्वाल 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हम ने प्रथम से अन्त तक कुरआन शरीफ को ध्यान से देखा है और ध्यान से देखा और बार बार देखा और इस के अर्थों में खूब चिन्तन किया हमें स्पष्ट रूप से यही रूप में यह पता चला है कि कुरआन शरीफ में जितने गुण और अल्लाह तआला के कार्यों का उल्लेख है उन सब विशेषताओं का विशेषय संज्ञा अल्लाह को ठहराया गया है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अंतत: हम यह भी वर्णन करना चाहते हैं कि वह बात जो अब्दुल हकीम ख़ान के पथभ्रष्ट होने का कारण हुआ है जिसकी वजह से उसे यह विचार हुआ है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन की आवश्यकता नहीं वह कुरआन शरीफ की एक आयत की ग़लतफहमी जो ज्ञान की कमी और चिन्तन की कमी के इससे उपस्थिति में आई और वह यह आयत है।

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَالَّذِیۡنَ ہَادُوۡا وَالنَّصٰرٰی وَالصّٰبِـُٔوۡنَ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَالۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ ۚ وَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَلَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۶۳﴾

(अनुवाद) जो लोग इस्लाम में प्रवेश कर चुके हैं और जो लोग यहूदी व ईसाई और सितारों की पूजा करते है, जो उनमें से अल्लाह और क़यामत के दिन में विश्वास लाएगा है और अच्छे कर्म करेगा ख़ुदा उसे बर्बाद नहीं होगा और ऐसे लोगों का इनाम अपने रब्ब के पास है और उन्हें कोई भय नहीं होगा और न शोक ।*

यह आयत है जिस से नादानी और टेड़ी धारणा के निष्कर्ष निकाला गया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की कुछ आवश्यकता नहीं। बहुत अफ़सोस है कि ये लोग अपने स्वयं अम्मारह का अनुकरण कर के मुहकम और स्पष्ट कुरआन की आयतों का विरोध करते हैं और इस्लाम से खारिज होने के लिए मुतशाबेहात की शरण ढूंढते हैं। उन्हें याद रहे कि इस आयत से वह कुछ लाभ नहीं उठा सकते क्योंकि अल्लाह तआला पर ईमान लाना और आख़िरत पर ईमान लाना इस बात को अनिवार्य चाहता है कि कुरआन शरीफ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया जाए। कारण यह है कि ख़ुदा तआला ने "अल्लाह" के नाम की कुरआन शरीफ में यह व्याख्या की है कि अल्लाह वह हस्ती है जो संसारों का रब्ब और रहमान और रहीम है जिस ने पृथ्वी और आकाश को छह दिन में बनाया और आदम को पैदा किया और रसूल भेजे और किताबें भेजीं और सबसे अंत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बनाया जो ख़ातमल अंबिया और ख़ैरुर्रसूल है और कयामत का दिल कुरआन शरीफ की दृष्टि से यह है कि जिसमें मुर्दे जी उठेंगे और फिर एक पक्ष जन्नत में प्रवेश किया जाएगा जो शारीरिक और आध्यात्मिक नेअमत की जगह है और एक पक्ष नरक में प्रवेश कराया जाएगा जो आध्यात्मिक और शारीरिक पीड़ा की जगह है और ख़ुदा तआला कुरआन शरीफ में फरमाता है कि इस आख़िरत के दिन पर वही लोग ईमान लाते हैं जो इस किताब पर विश्वास करते हैं।

अत: जब अल्लाह ने ख़ुद अल्लाह शब्द और क़यामत के दिन के विस्तार से ऐसे अर्थ कर दिए जो इस्लाम से विशिष्ट हैं तो जो व्यक्ति अल्लाह तआला पर ईमान लाएगा और क़यामत के दिन पर विश्वास करेगा इसके लिए यह जरूरी होगा कि कुरआन शरीफ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए और किसी का अधिकार नहीं है कि इन अर्थों को बदल डाले और हम इस बात के लिए अधिकृत नहीं हैं कि अपनी ओर से कोई ऐसे अर्थ आविष्कार करें कि जो कुरान शरीफ के वर्णन किए अर्थों से विपरीत और विरोधी हों

हम ने प्रथम से अन्त तक कुरआन शरीफ को ध्यान से देखा है और ध्यान से देखा और बार बार देखा और इस के अर्थों में खूब चिन्तन किया हमें स्पष्ट रूप से यही रूप में यह पता चला है कि कुरआन शरीफ में जितने गुण और अल्लाह तआला के कार्यों का उल्लेख है उन सब विशेषताओं का विशेषय संज्ञा अल्लाह को ठहराया गया है। जैसे कहा गया है اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ऐसा ही इस प्रकार की और कई आयतें हैं जिन में यह वर्णन है कि अल्लाह वह है जिसने कुरआन उतारा। अल्लाह वह है जिसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा। अत: जब के कुरआन के अर्थों में शब्द अल्लाह के अर्थ में यह वर्णन है कि अल्लाह वह है जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा है इसलिए यह ज़रूरी है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला पर ईमान लाए तभी उसका ईमान विश्वसनीय और उचित माना जाएगा जबकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए। ख़ुदा तआला ने इस आयत में यह नहीं फरमाया कि مَن اٰمَن بالرحمٰن یامن اٰمن بالرحیم बल्कि यह फरमाया कि مَن اٰمَن باللّٰہ یا من اٰمن بالکریم और अल्लाह से अभिप्राय वह हस्ती है जो सम्पूर्ण विशेषताओं से परिपूर्ण है और एक भव्य विशेषण उस का यह है कि उस ने कुरआन शरीफ को उतारा। इस मामले में हम केवल ऐसे व्यक्ति की तुलना में कह सकते हैं कि वह अल्लाह तआला पर ईमान लाया जबकि वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाया हो और कुरान शरीफ पर भी विश्वास लाया हो। अगर कोई कहे कि फिर "इन्नल्लज़ीन आमनू" के क्या अर्थ हुए तो याद रहे कि यह अर्थ है कि जो लोग सिर्फ ख़ुदा तआला पर विश्वास करते हैं उनका विश्वास विश्वसनीय नहीं है। जब तक ख़ुदा के रसूल में विश्वास न लाऐं या जब तक उस विश्वास को पूर्ण न करें। इस बात को याद रखना चाहिए कि कुरआन शरीफ में मतभेद नहीं है। तो यह कैसे हो सकता है कि सैंकड़ों आयतों में तो ख़ुदा तआला यह फरमाए कि केवल तौहीद ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके नबी पर ईमान लाना मुक्ति के लिए आवश्यक है सिवाय इस मामला कि के कोई इस नबी से अज्ञान रहा हो और फिर किसी एक आयत में इसके विपरीत यह बतलाए कि केवल तौहीद से ही उद्धार हो सकता है। कुरआन शरीफ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में विश्वास की कुछ आवश्यकता नहीं और कमाल यह है कि इस आयत में तौहीद का उल्लेख नहीं। अगर तौहीद अभिप्राय होती तो इस प्रकार कहना चाहिए था कि "मन आमन बित्तौहीद" मगर आयत का तो यह शब्द है कि "मन आमन बिल्लाह" इसलिए "आमन बिल्लाह" का वाक्यांश हम पर अनिवार्य करता है कि हम इस बात पर विचार करें कि कुरआन शरीफ में अल्लाह का शब्द किन अर्थों में आता है। हमारी ईमानदारी की यह अपेक्षा होना चाहिए कि जब हमें ख़ुद कुरआन से ही यह पता चला कि अल्लाह के अर्थ में यह वर्णित है कि अल्लाह वह है जिसने कुरआन भेजा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा तो हम उसी अर्थ को स्वीकार कर लें जो कुरआन शरीफ ने वर्णन किए और अपना रास्ता धारण न करें।

* यदि इस आयत से यह निकलता है कि केवल तौहीद काफी है तो नीचे की आयत से यह साबित होगा कि शिर्क आदि सब गुनाह बिना पश्चाताप के बख़्शे जाएंगे और वह आयत यह है। قُلۡ یٰعِبَادِیَ الَّذِیۡنَ اَسۡرَفُوۡا عَلٰۤی اَنۡفُسِہِمۡ لَا تَقۡنَطُوۡا مِنۡ رَّحۡمَۃِ اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ یَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ جَمِیۡعًا ؕ اِنَّہٗ ہُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِیۡمُ इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 144 -147)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

सन्तान की तरबियत के तरीके

हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो (अन्तिम भाग-2)

(3) आहार बच्चे को निर्धारित समय पर देना चाहिए। इससे बच्चे में यह आदत होती है कि वह इच्छाओं को दबा सकता है और इस तरह कई गुनाहों से बच सकता है। चोरी, लूट आदि कई बुराइयां जो इच्छाओं को न दबाने के कारण ही पैदा होती हैं। क्योंकि ऐसे व्यक्ति में भावनाओं पर काबू रखने की शक्ति नहीं होती। और उसका कारण यह होता है कि जब बच्चा रोया माँ ने उसी समय दूध दे दिया। ऐसा नहीं करना चाहिए बल्कि निर्धारित समय पर दूध देना चाहिए। और बड़े बच्चों में यह आदत डालनी चाहिए कि समय पर खाना दिया जाए। इससे यह गुण पैदा होते हैं (1) समय की पाबन्दी का एहसास (2) इच्छा को दबाना (3) स्वास्थ्य (4) काम करने की आदत होती है। क्योंकि ऐसे बच्चों में स्वार्थ और नफसानियत न होगी। जबकि वे सभी के साथ मिलकर खाना खाएंगे। (5) बहुत अधिक खर्च की आदत नहीं होगी। जो बच्चे हर समय खाने की चीज़ें लेता रहता है वह उनमें से कुछ बर्बाद करेगा, कुछ खाएगा लेकिन अगर निर्धारित समय पर निर्धारित मात्रा में खाने की चीज़ दी जाएगी तो वे इस में से कुछ नष्ट नहीं करेगा। इसलिए इस तरह बच्चा थोड़ी वस्तु उपयोग करने और इसीसे इच्छा को पूरा करने की आदत होगी (6) लालच का मुकाबला करने की आदत होगी। जैसे बाजार में चलते हुए बच्चा एक चीज़ देखकर कहता है। यह लेनी है। अगर इस समय उसे न लेकर दी जाए तो वह अपनी इच्छा को दबा लेगा। और फिर बड़ा होने पर कई बार मन में उत्पन्न लालच का मुकाबला करने की उसे आदत हो जाएगी।

इसी तरह घर में वस्तु पड़ी हो और बच्चा मांगे तो कह देना चाहिए कि खाने के समय पर मिलेगी। इससे भी यह शक्ति पैदा हो जाएगी कि नफ्स को दबा सकेगा।

जमींदार गन्ने, मूली, गाजर, गुड़ आदि के बारे में इसी तरह कर सकते हैं।

(4) बच्चे को निर्धारित समय पर मल की आदत डालनी चाहिए। यह उसकी सेहत के लिए भी उपयोगी है। लेकिन इससे बड़ा लाभ यह होता है कि उसके अंगों में समय की पाबंदी की भावना पैदा हो जाती है। निश्चित समय पर मल करने से अंतड़ियों को आदत हो जाती है और फिर निर्धारित समय पर ही मल आता है। यूरोप में तो कुछ लोग पाख़ाना से समय बता देते हैं। कि अब यह समय होगा। क्योंकि समय पर उन्हें मल करने की आवश्यकता महसूस होती है। तो बच्चे के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। समय पर काम करने वाले बच्चे में नमाज़, रोज़ा की दृढ़ आदत पैदा हो जाती है और क़ौमी कार्य पीछे डालने की आदत नहीं पैदा होती। इसके अतिरिक्त वर्यथ जोश दब जाते हैं। क्योंकि वयर्थ उत्साह का एक बड़ा कारण असमय काम करने की आदत है विशेष करके असामयिक खाना खाना। जैसे बच्चे खेल कूद में व्यस्त। समय पर माँ ने खाना खाने के लिए बुलाया लेकिन नहीं आया। फिर जब आया तो माँ ने कहा रुको खाना गर्म कर दूं। चूंकि उस समय भूख लगी होती है इसलिए वह रोता चिल्लाता और व्यर्थ का जोश प्रकट करता है, क्योंकि वह उसी समय खाने के लिए आता है जब उस से भूख दबाई नहीं जाती। और इस से बहुत अधिक शोर करता है।

(5) उसी तरह भोजन अनुमान के अनुसार दिया जाए। इससे संतोष पैदा होता और लालच दूर होती है।

(6) प्रकार प्रकार की खुराक दी जाए, मांस, सलाद और फल दिए जाएं क्योंकि खाने भी विभिन्न प्रकार के आचरण पैदा करते हैं। इसलिए विभिन्न नैतिकता के लिए विभिन्न खानों का दिया जाना चाहिए। हाँ, बचपन में मांस कम और सलाद अधिक होनी चाहिए। क्योंकि मांस जोश पैदा करता है और बचपन के दिनों में जोश कम होना चाहिए।

(7) जब बच्चा थोड़ा बड़ा हो तो खेल के रूप में इस से काम लेना चाहिए। जैसे यह कि अमुक बर्तन उठा लाओ। इस चीज़ वहाँ रख आओ। इस चीज़ अमुक को दे आओ। इसी प्रकार के और काम कराने चाहिए हाँ एक समय तक उसे अपने दम पर खेलने की भी अनुमति देनी चाहिए।

(8) बच्चे को आदत डालनी चाहिए कि वे अपने स्वयं पर विश्वास पैदा करे। से जैसे चीज़ सामने हो और उसे कहा जाए अब नहीं मिलेगी। अमुक समय मिलेगी। यह नहीं कि छुपा दी जाए। क्योंकि इस नमूने को देखकर वे भी इसी तरह करेगा। और इस में चोरी की आदत पैदा हो जाएगी।

(9) बच्चा को अधिक प्यार नहीं करना चाहिए। अधिक चूमने चाटने की आदत से बहुत सी बुराइयां बच्चा पैदा हो जाती हैं। जिस मज्लिस में वह है उसकी इच्छा होती है कि लोग प्यार करें। इससे उसमें नैतिक कमज़ोरियां पैदा हो जाती हैं।

(10) माता-पिता को चाहिए कि त्याग से काम लें। जैसे अगर बच्चा बीमार है और कोई चीज़ उसने नहीं खानी तो वह भी न खाएं और न घर में लाएं बल्कि उसे कहें कि तुम ने नहीं खानी इसलिए हम नहीं खाते। इससे बच्चा में भी त्याग का गुण पैदा होगा।

(11) रोग में बच्चे के बारे में बहुत ध्यान देना चाहिए क्योंकि कायरता, स्वार्थ, चिड़चिड़ाहट भावनाओं पर काबू न होना इस प्रकार की बुराइयां प्राय लंबी बीमारी की वजह से पैदा हो जाती हैं। कई लोग तो ऐसे होते हैं जो दूसरों को बुला बुला कर पास बिठाते हैं। लेकिन कई ऐसे होते हैं कि अगर कोई उनके पास से गुज़रे तो कह उठते हैं। अरे देखता नहीं, अंधा हो गया है। यह बुराई लंबी बीमारी की वजह से पैदा हो जाती है। चूंकि बीमारी में बीमार को आराम पहुंचाने की कोशिश की जाती है इसलिए वे आराम पाना अपना अधिकार समझ लेता है। और हर समय आराम करना चाहता है।

(12) बच्चों को भयानक कहानियां नहीं सुनानी चाहिए। इससे उनमें कायरता पैदा हो जाती है और ऐसे इंसान बड़े होकर वीरता के काम नहीं कर सकते। अगर बच्चा कायरता पैदा हो जाए तो उसे वीरता की कहानियां सुनानी चाहिए। और बहादुर लोगों के साथ खिलाना चाहिए।

(13) बच्चा अपने दोस्त खुद न चुनने दिया जाए बल्कि माता पिता चुनें और देखें कि किन बच्चों के आचरण उच्च हैं। इसमें माता-पिता को भी यह लाभ होगा कि वे देखेंगे किन बच्चों के आचरण उच्च हैं। दूसरे एक दूसरे से सहयोग शुरू हो जाएगा। क्योंकि जब खुद माता-पिता से बच्चे कहेंगे कि अमुक बच्चों से खेला करो तो इस तरह इन बच्चों के आचरण की निगरानी भी करेंगे।

(14) बच्चे को उस की उम्र के अनुसार कुछ ज़िम्मेदारी के काम दिए जाऐं ताकि इस में ज़िम्मेदारी का एहसास हो। एक कहानी प्रसिद्ध है कि एक पिता के दो बेटे थे। उसने दोनों को बुलाकर उन में से एक को सेब दिया और कहा कि बांटकर खाओ। जब वह सेब लेकर चलने लगा तो पिता ने कहा जानते हो कैसे बांटना है। उसने कहा नहीं। पिता ने कहा। जो बांटे वह थोड़ा ले। और दूसरे को अधिक दे। यह सुनकर लड़के ने कहा फिर दूसरे को दें कि वह बांटे। मालूम होता है इस लड़के में पहले ही बुरी आदत पड़ चुकी थी लेकिन साथ यह भी पता चलता है कि वह इस बात को समझता था कि अगर ज़िम्मेदारी मुझ पर पड़ी तो मुझे दूसरे को अपने से प्राथमिकता करनी पड़ेगा। इस आदत के लिए कुछ खेल बहुत उपयोगी हैं जैसे कि फुटबाल आदि।

मगर खेल में भी देखना चाहिए कि कोई बुरी आदत न पड़े। आमतौर पर देखा गया है कि माता-पिता अपने बच्चे का समर्थन करते हैं और दूसरे के बच्चे को अपने बच्चे की बात मानने के लिए मजबूर करते हैं। इस तरह बच्चे को अपनी बात मनवाने की ज़िद पड़ जाती है।

(15) बच्चे के दिल में यह बात डालनी चाहिए कि वह नेक है और अच्छा है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया बिंदु फरमाया है कि बच्चे को गालियां न दो क्योंकि गालियां देने पर फरिशते कहते हैं। ऐसा ही हो जाए और वह हो जाता है।

इसका मतलब यह है कि फरिशते कर्मों के परिणाम का फल पैदा करते हैं। जब बच्चा को कहा जाता है कि तो बुरा तो वह अपने दिमाग़ में यह नक्शा जमा लेता है कि बुरा हूँ और फिर वह वैसा ही हो जाता है। इसलिए बच्चे को गालियां नहीं देनी चाहिए बल्कि अच्छे आचरण सिखाने चाहिए और बच्चे की सराहना करनी चाहिए।

आज सुबह मेरी लड़की पैसा मांगने आई। जब मैंने पैसा दिया तो बायां हाथ किया। मैंने कहा यह तो ठीक नहीं। कहने लगी हां ग़लती है फिर नहीं करूंगी। उसे ग़लती का एहसास कराने से तुरंत एहसास हो गया।

(16) बच्चा ज़िद की आदत नहीं पैदा करनी चाहिए। अगर बच्चा किसी बात

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"रोज़ा जैसे तक्वा सीखने का माध्यम है वैसा ही अल्लाह तआला की नज़दीकी पाने का भी माध्यम है।" इसलिए केवल रमज़ान का महीना दुआओं की स्वीकृति के कारण नहीं हो सकता जब तक कि उसे तक्वा सीखने, तक्वा से जीवन बसर करने और अल्लाह तआला की नज़दीकी प्राप्त करने का माध्यम बनाने की कोशिश न की जाए और जब यह मामला होगा तो अल्लाह तआला से रमज़ान में बनाया हुआ संबंध केवल रमज़ान तक सीमित नहीं होगा बल्कि स्थायी परिवर्तन का प्रभाव दिखाई देगा।

दुआओं की स्वीकृति की शर्तें, इस के सिद्धान्त और दर्शन का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से ईमान वर्धक वर्णन और जमाअत के लोगों को नसीहतें।

आदरणीय राजा ग़ालिब साहिब आफ लाहौर, और आदरणीय मलक मुहम्मद अहमद आप जर्मनी का देहान्त, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 17 जून 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ

(सूरह अल्बकरह: 187)

और जब मेरे बन्दे तुझ से मेरे बारे में सवाल करें तो मैं नि:संदेह मैं निकट हूँ। मैं दुआ करने वाले की जुआ का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। इसलिए चाहिए कि वह भी मेरी बात पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदायत पाएं।

यह आयत रोज़ा रखने के आदेश, इस की शर्तों और इससे संबंधित आदेश की आयतों के लगभग बीच में रखकर अल्लाह तआला ने हमें रमज़ान और दुआओं की स्वीकृति के विशेष संबंध की ओर ध्यान दिलाया है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस संबंध को यूं वर्णन फरमाया कि रोज़ा जैसे तक्वा सीखने का माध्यम है वैसा ही अल्लाह तआला की नज़दीकी पाने का भी माध्यम है। (हकायकुल फुर्कान भाग1 पृष्ठ 308)

इसलिए केवल रमज़ान का महीना दुआओं की स्वीकृति के कारण नहीं हो सकता जब तक कि उसे तक्वा सीखने, तक्वा से जीवन बसर करने और अल्लाह तआला की नज़दीकी प्राप्त करने का माध्यम बनाने की कोशिश न की जाए और जब यह मामला होगा तो अल्लाह तआला से रमज़ान में बनाया हुआ संबंध केवल रमज़ान तक सीमित नहीं होगा बल्कि स्थायी परिवर्तन का प्रभाव प्रकट होंगे। अल्लाह तआला ने भी यही इस आयत में बताया है कि मैं निकट हूँ। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस महीने में शैतान जकड़ दिया जाता है और अल्लाह तआला क़रीब आ जाता है निचले आसमान पर आ जाता है

(सहीह बुख़ारी किताबुस्सौम हदीस नम्बर 1899 ई)

लेकिन किन के पास आता है ? उनके जो अल्लाह तआला के नज़दीकी महसूस करते हैं या करना चाहते हैं और इसके लिए अल्लाह तआला की बात मानते हैं। अल्लाह तआला के आदेश فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ का पालन करने की कोशिश करते हैं। अल्लाह तआला के आदेश का पता लगाते हैं और उन पर अनुकरण करने के लिए लब्बैक कहते हैं। विश्वास और ईमान रखते हैं कि ख़ुदा तआला सब शक्तियों वाला है। अगर मैं इस के आदेश का पालन करते हुए उसके लिए शुद्ध होते हुए उससे मांगों तो वह मेरी दुआएं सुनेगा।

अत: अल्लाह तआला नि:संदेह अपने बन्दों के सवाल के जवाब में यह कहता है कि मैं करीब हूँ, मैं अपने बन्दा की दुआ सुनता हूँ और इस महीने में विशेष रूप से तुम्हारे निकट आ गया हूँ मुझे पुकारो लेकिन अपनी दआओं की स्वीकृति के लिए मुझे पुकारने से पहले यह शर्त है कि मेरी सुनो। मेरे आदेश का पालन करो। और मेरे सभी शक्तियों पर पूर्ण विश्वास और ईमान रखो। इन नियमों का तुम्हें पालन करना होगा।

इसलिए जो लोग कहते हैं कि हम दुआ करते हैं दुआएं स्वीकार नहीं होतीं। वे अपनी समीक्षा भी लेते हैं? कि उन्होंने कहाँ तक ख़ुदा तआला के आदेश का पालन है? अगर हमारे पालन नहीं। हमारा ईमान केवल औपचारिक है तो हमारा यह कहना ग़लत है कि हम ने अल्लाह तआला को पुकारा लेकिन हमारी दुआएं स्वीकार नहीं हुईं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को वर्णन करते हुए कि ख़ुदा तआला ने क्या शर्तें रखी हैं। फरमाया कि "पहली बात अल्लाह तआला ने यह वर्णन की है कि लोग ऐसी तक्वा की हालत और भक्ति की पैदा करें कि मैं उनकी आवाज़ सुनूं।"

(अय्यामुस्सुलह रूहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 261)

तक़वा पैदा हो। ख़ुदा तआला से डरें। ख़ुदा तआला का भय हो तो फिर अल्लाह तआला आवज़ सुनता है। दूसरी बात कि मुझ पर ईमान लाएं कैसा ईमान ? इस बात पर ईमान कि ख़ुदा तआला मौजूद है और सभी शक्तियां और सामर्थ्य रखता है। ख़ुदा तआला के अस्तित्व और सभी शक्तियां और सामर्थ्य रखने का अनुभव चाहे मनुष्य को हुआ है या नहीं हुआ या ख़ुदा तआला के अस्तित्व और उसकी सारी शक्तियों के मालिक होने की हुई है या नहीं हुई। अगर नहीं भी हुई तब भी ऐसा ईमान है कि ख़ुदा तआला है और सभी शक्तियों का मालिक है। मानो ग़ैब पर ईमान हो। अगर पहले यह होगा तो फिर अल्लाह तआला की तरफ से ऐसा ज्ञान भी मिलेगा जिस से ख़ुदा तआला के अस्तित्व और उस की सारी शक्तियों के मालिक होने, उसका दुआओं का जवाब देने का अनुभव भी हो जाएगा। पहले मनुष्य को अपने ईमान को मज़बूत करना होगा फिर अल्लाह तआला कदम बढ़ता है और फिर सबूत भी उपलब्ध होगा। दुआओं की स्वीकृति की शर्तें, इस के सिद्धांत उसका दर्शन आदि पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत विस्तार से विभिन्न अवसरों पर प्रकाश डाला है।

इस समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण भी पेश करूंगा जिससे हम इस विषय की गहराई को समझते हुए रमज़ान में इसे अल्लाह तआला की निकटता का माध्यम बनाते हुए अपना ज्ञान और अनुभूति भी बढ़ा सकते हैं और वास्तविक निर्देश पाने वालों में शामिल हो सकते हैं और रमज़ान का वास्तविक लाभ भी पा सकते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि जो भी दुआएं उन्होंने की हैं वह ज़रूर स्वीकार होनी चाहिए। इस बारे में थोड़ा सा वर्णन तो मैंने पहले कर दिया है कि अल्लाह तआला ने स्वीकृति के लिए कुछ शर्तें रखी हैं जिन्हें पूरा करना भी हमारा कर्तव्य है। इस बात की व्याख्या कहते हुए कि स्वीकृति के क्या नियम हैं और कई बार सब शर्तें पूरी करने वालों की भी दुआ इस तरह स्वीकार नहीं होती जिस तरह वे दुआ करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"दुआ का नियम यही है कि अल्लाह तआला दुआ स्वीकार करने में हमारे विचार और इच्छा के अधीन नहीं होता। देखो बच्चे कितना अपनी माताओं को प्यारे होते हैं और वह चाहती है कि उन्हें किसी प्रकार की चोट न पहुंचे लेकिन अगर बच्चे बेहूदा रूप में मांग करें और रोकर तेज़ चाकू या चमकीली आग और चमकता हुआ अंगारा मांगें तो क्या माँ बावजूद सच्चे प्यार और सच्चे दिल सोज़ी से कभी गवारा करेगी कि उसका बच्चा आग का अंगारा लेकर हाथ जला ले या चाकू की तेज़ धार पर

हाथ मार हाथ काट ले? हरगिज़ नहीं। इसी सिद्धांत से दुआ की स्वीकृति का सिद्धांत समझ सकते हैं" फरमाया कि "मैं ख़ुद इस बात में अनुभव करता हूं कि जब दुआ में कोई घटक ख़तरनाक होता है तो वह दुआ हरगिज़ स्वीकार नहीं होती। यह बात ख़ूब समझ में आ सकती है कि हमारा ज्ञान सुनिश्चित और सहीह नहीं। कई काम हम बहुत ख़ुशी से मुबारक समझकर करते हैं और अपने विचार में परिणाम मुबारक ही विचार करते हैं। मगर अंततः वह ही एक पीड़ा और परेशानी हो कर चिमट जाता है। अत: यह कि मानवीय इच्छाएं सब पर उचित नहीं कर सकते कि सही हैं। (हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि यह सही है।) चूंकि इंसान भूल तथा और विस्मृति का मिश्रण है (भूल चूक इंसान से होती है प्रकृति में है) इस लिए होना चाहिए और है कि कुछ ख़तरनाक इच्छाएं होती हैं और अगर अल्लाह तआला उसे स्वीकार कर ले तो यह बात दया के स्थान से स्पष्ट विरुद्ध है।"

इसलिए मनुष्य तो समझता है कि उसे होना चाहिए लेकिन इच्छा कई बार आदमी के लिए हानिकारक होती है। यदि अल्लाह तआला उसे स्वीकार कर ले तो अल्लाह तआला की दया का जो स्थान है यह बात उसके ख़िलाफ हो जाएगी। अल्लाह तआला तो दुआ करने वाले के लिए, अपने बन्दा के लिए दया चाहता है अगर हर इच्छा उसकी पूरी कर ले चाहे इससे उसका नुकसान हो रहा हो तो उसका जो दया का स्थान है वह बात फिर उसके ख़िलाफ चली जाती है। फरमाया कि "यह एक सच्ची और निश्चित बात है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की दुआओं को सुनता है और उन्हें स्वीकृति का सौभाग्य देता है मगर व्यर्थ और बेकार को नहीं क्योंकि नफ्स के जोश के कारण मानव अन्जाम और अन्त को नहीं देखता और दुआ करता है मगर अल्लाह तआला जो वास्तविक भलाई चाहने वाला चाहे और अन्त को देखने वाला है उन कठिनाइयों और बुरे परिणामों को ध्यान में रखकर जो दुआ के अधीन अन्यथा स्वीकार करने के रूप में पहुंच सकते हैं इसे अस्वीकार कर देता है (मनुष्य तो अपना अन्जाम नहीं देखता लेकिन अल्लाह तआला जो अपने बन्दा का एक वास्तविक हितैषी है उसकी भलाई चाहता है। उस को अंजाम की भी ख़बर है। अंजाम उसे नज़र आ रहा है क्या होना है। वह जो दोष हैं जो उसे नुकसान पहुंच सकते हैं, जो बुरे परिणाम हो सकते हैं उन्हें सामने रखते हुए दुआ को अस्वीकार कर देता है क्योंकि अपने बन्दा की भलाई अल्लाह तआला इसी में समझता है कि उसकी यह दुआ अस्वीकार कर दे) और फरमाया कि यह दुआ का अस्वीकार करना ही उसके लिए दुआ स्वीकार करना होना है। (जब ऐसी दुआ अल्लाह तआला के यहां अस्वीकार कर दी जाती है स्वीकार नहीं होती तो यही अल्लाह तआला की स्वीकृति की गवाह है क्योंकि अल्लाह तआला ने माना कि मनुष्य के लिए यह बेहतर नहीं इस बन्दा के लिए यह बेहतर नहीं) तो ऐसी दुआएं जिन में मनुष्य कठिनाइयों और हानि से सुरक्षित रहता है। अल्लाह तआला स्वीकार कर लेता है मगर ख़तरनाक दुआओं को अस्वीकार कर के स्वीकार कर लेता है।" (कई जिन में लाभ है वह उसी तरह स्वीकार करता है जिन में इंसान का नुकसान होता है उन्हें अस्वीकार कर देता है स्वीकार नहीं करता है और यही उसकी स्वीकृति है)

आप फरमाते हैं कि मुझे यह इल्हाम बार-बार हो चुका है। اُجِيْبُ كُلَّ دُعَآئِكَ दूसरे शब्दों में यूँ कहो कि हर एक ऐसी दुआ जो अपने वास्तविक अर्थों में लाभदायक और उपयोगी है स्वीकार की जाएगी।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 106-107 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

जो मांगने की दृष्टि से लाभदायक है, लाभ देने वाला है और उपयोगी है वह स्वीकार किया जाएगा प्रत्येक दुआ स्वीकार नहीं होगी। तो अल्लाह तआला अपने औलिया और नबियों की भी कुछ दुआएं सुनता है कुछ नहीं सुनता और इसलिए नहीं सुनता कि वह समझता है कि वह लाभदायक नहीं हैं या इनके परिणाम भयानक हो सकते हैं क्योंकि अल्लाह तआला ग़ैब का ज्ञान रखने वाला है वह बेहतर जानता है।

फिर इस बात को समझाते हुए कि दुआ के अपने कर्मों और कार्यों को भी देखना चाहिए। आप फरमाते हैं कि

"यह सच्ची बात है कि जो व्यक्ति कर्मों से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता (केवल दुआ ज़रूरी नहीं। कर्म भी ज़रूरी हैं) बल्कि ख़ुदा तआला का परीक्षण करता है। (यदि कर्म नहीं और केवल दुआ है तो वह दुआ नहीं। तुम अल्लाह तआला का परीक्षण कर रहे हो।) इसलिए दुआ करने से पहले अपनी सभी शक्तियों को खर्च करना आवश्यक है और यही अर्थ इस दुआ के हैं। पहले अनिवार्य है कि मनुष्य अपनी आस्था तथा कर्मों में नज़र करे क्योंकि ख़ुदा तआला की आदत है कि सुधार कारणों के माध्यम में होता है। (सुधार होता है इसके लिए कुछ कारण मौजूद होने चाहिए) वह कोई न कोई ऐसा कारण पैदा कर देता है कि सुधार का कारण हो जाता है। वे लोग इस स्थान पर कुछ ध्यान करें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो कारणों की क्या आवश्यकता है। (दुआ हो गई इसलिए कारणों की कोई ज़रूरत नहीं है) वह अज्ञान हैं सोचें कि दुआ स्वयं एक छिपा हुआ कारण है। (दुआ भी तो किसी काम के लिए एक छिपा हुआ कारण है इस काम के करने के लिए कारण बनता है) जो दूसरे कारणों को पैदा कर देता है (दुआ के माध्यम से। दुआ अपने आप में ख़ुद ही एक कारण बनता है और इस कारण से जब दुआ स्वीकार होती है तो इस काम के करने के लिए दूसरे कारण पैदा हो जाते हैं। किसी व्यक्ति को ऋण की ज़रूरत है। पैसे की ज़रूरत है किसी की मदद की ज़रूरत है तो अल्लाह तआला किसी माध्यम से उसे वह उपलब्ध करवा देता है। इसके लिए सुविधाएं पैदा करवा देता है। आसमान से कोई चीज़ नहीं टपकती। अगर किसी को पैसे की ज़रूरत है तो आसमान से नहीं उतरेंगे बल्कि कोई माध्यम बनेगा और वही कारण है जो कि दुआ के माध्यम से अल्लाह तआला ने बनाया) फरमाया और "इय्याक नअबुदो" को "इय्याक नसतईन" पर जो प्राथमिकता है दुआ की बात है इस बात की विशेष व्याख्या कर रहा है। (पहले इय्याक नअबुदो कहा और फिर तुझ से सहायता मांगते हैं। दुआ करते हैं। साथ मदद मांगते हैं और दुआ के साथ ही मदद जो माध्यम की ओर ध्यान है वह भी हो जाता है) अत: अल्लाह तआला की आदत हम यूं ही देख रहे हैं कि वह साधन के गुण को कर देता है। देखो प्यास के बुझाने के लिए पानी और भूख मिटाने के लिए भोजन प्रदान करता है, लेकिन कारणों के माध्यम से। (कोई माध्यम बनाता है) तो यह सिलसिला कारण का यूं ही चलता है और कारण का होना आवश्यक होता है (कारण पैदा होते हैं) क्योंकि ख़ुदा तआला के ये दो नाम ही हैं كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا अज़ीज़ तो यह है कि हर एक काम देना। (विजित है शक्ति रखता है, हर काम कर सकता है, कर देता है और हकीम यह है कि प्रत्येक कार्य एक ज्ञान से अवसर और स्थान के उचित और उपयुक्त कर देना।) "देखो वनस्पति जड़ में तरह तरह के गुण रखे हैं। "तरबद" ही को देखो कि वह एक दो तोला तक दस्त ले आती है ऐसा ही "सकमोनिया।" अल्लाह तआला इस बात की तो शक्ति रखता है कि यूं ही दस्त आ जाए या प्यास पानी के बिना ही बुझ जाए (बिना पानी प्यास बुझ जाए) मगर चूंकि प्रकृति के चमत्कारों का ज्ञान कराना भी ज़रूरी था क्योंकि जितना प्रकृति के चमत्कारों से परिचय विस्तृत होता जाता है उतनी ही इंसान अल्लाह तआला के गुण का ज्ञान पा कर निकटता प्राप्त करने में सक्षम होता जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 124-125 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

यह अल्लाह तआला ने चीज़ें पैदा की हैं इनके गुणों और इनकी विशेषताओं का ज्ञान दिलवाना भी तो अल्लाह तआला के लिए आवश्यक है कि वे भी अल्लाह तआला की पैदा की हुई वस्तुएं हैं और फरमाया कि उनका ज्ञान जो अल्लाह तआला ने पैदा की हैं इन का ज्ञान जब बढ़ता है जितना जितना व्यापक ज्ञान होता है उतनी ही अल्लाह तआला की विशेषताओं पर सूचना होती है। मनुष्य को उसकी समझ पैदा होती है और इस योग्य हो जाता है कि इंसान उसकी समझ प्राप्त करे और यही एक नेक व्यक्ति का काम है। एक नास्तिक अपने ज्ञान को बहुत कुछ समझता है लेकिन एक मोमिन इस ज्ञान की वृद्धि से अल्लाह तआला के गुण और उसकी कुदरतों को जानने वाला बनता है

फिर दुआ की फिलासफी को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह इस तरह उल्लेख किया कि

"देखो एक बच्चा भूख से हताश है और व्याकुल होकर दूध के लिए चिल्लाता है और चीखता है तो माँ के स्तन में दूध जोश मार कर आ जाता है हालांकि बच्चा तो दुआ का नाम नहीं जानता लेकिन यह क्या कारण है कि उसकी चिल्लाहट दूध को ख़ींच लेती है। यह एक ऐसा कार्य है कि प्राय प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव है। कई बार ऐसा देखा गया है कि माएं अपनी छातियों में दूध महसूस नहीं करतीं और कभी कभी होता भी नहीं लेकिन जैसे ही बच्चे की दर्दनाक चीख़ कान में पहुंची तुरंत दूध उतर आया। जैसे बच्चे की इन चीख़ों को दूध के खींचने और आकर्षक के साथ एक संबंध है, मैं सच कहता हूँ कि यदि अल्लाह तआला के सम्मुख हमारी चिल्लाहट ऐसी ही व्याकुलता से हो तो वह उसकी कृपा और दया को जोश दिलाती है और उसे खींच लाती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 198 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर उसके आगे स्पष्टीकरण कहते हुए कि माँ बच्चा का उदाहरण जो आपने दी है। यह दुआ का दर्शन है इसके अधीन मांगना मनुष्य का गुण होना चाहिए और जब यह गुण मनुष्य का हो तो अल्लाह तआला उसे स्वीकृति का भी नज़ारा दिखाता

है। आप फरमाते हैं कि

"मांगना मनुष्य का गुण है और स्वीकार करना अल्लाह तआला का। जो नहीं समझता और नहीं मानता वह झूठा है। बच्चे का जो उदाहरण मैंने वर्णन किया है वह से दुआ की फिलासफी खूब हल करके दिखाती है। रहमानियत और रहीमियत दो नहीं हैं। अत: जो एक को छोड़कर दूसरे को चाहता है उसे मिल नहीं सकता। (यदि रहमानियत को छोड़ें रहीमियत लेने के लिए तो नहीं हो सकता) रहमानियत का तकाज़ा यही है कि वह हम में रहीमियत से लाभ उठाने कि शक्ति पैदा करे। (अल्लाह तआला की जो रहीमियत है इससे मांग कर लेने की जो शक्तियां हैं वे रहमानियत इसमें पैदा करती है) जो ऐसा नहीं करता वह नेअमत का इन्कार करने वाला है (अल्लाह तआला की नेअमतों का इन्कार करने वाला है) इय्याक नअबुदो के यही अर्थ हैं कि हम तेरी इबादत करते हैं उन बाहरी सामानों और माध्यमों के द्वारा जो तूने प्रदान किए हैं (हम इबादत करते हैं और बाहरी कारणों में से एक कारण दुआ है दूसरे इन चीज़ों को हरकत में लाने का जो हमारे लिए इस काम के लिए नियुक्त किया गया है) देखो यह जीभ जो रस और घटक से सृष्टि की है (इस में जीभ है इस की तंत्रिकाएं बनाई गए हैं इसमें लार है जो इसके अंदर है) अगर ऐसी न होती तो हम बोल नहीं सकते (जीभ सूख जाए तो इंसान बोल नहीं सकता। जीभ की कोई रग खिच जाए तो वहीं जम जाती है) फरमाया कि ऐसी जीभ दुआ के लिए दी जो दिल के विचारों तक को प्रकट कर सके (जीभ दी ताकि दिल के विचार प्रकट हों इससे आदमी बोल सके) अगर हम दुआ का काम जीभ से कभी न लें तो यह हमारा दुर्भाग्य है। कई बीमारयाँ एसी हैं कि अगर वे ज़बान को लग जाएं तो अचानक ही ज़बान अपना काम छोड़ बैठती है यहां तक कि मनुष्य गूंगा हो जाता है तो यह कैसी रहीमियत है कि हमें ज़बान दे रखी है ऐसा ही कानों की बनावट में अंतर आ जाए तो धूल भी सुनाई नहीं दे। ऐसा ही दिल का हाल है जो विनम्रता तथा विनय की स्थिति रखी है और सोचने और विचार की शक्तियां रखी है अगर बीमारी आ जाए तो वे लगभग बेकार हो जाती हैं। दीवानों को देखो कि उनकी शक्तियां कैसे बेकार हो जाती हैं । तो क्या हम पर अनिवार्य नहीं कि ख़ुदा की दी नेअमतों का सम्मान करें ? अगर इन शक्तियों को जो अल्लाह तआला ने अपनी अपार कृपा से हमें प्रदान किए हैं बेकार छोड़ दें तो नि:सन्देह हम उपकार का इन्कार करने वाले हैं (तो निश्चित रूप से हम अल्लाह तआला के उपकारों से इनकार करने वाले हैं। कृतघ्न हैं) तो याद रखो कि अगर अपनी शक्तियों और ताकतों को निलंबित छोड़कर दुआ करते हैं तो दुआ कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकती। (जो अल्लाह तआला ने शक्तियां दी हैं, ताकतें दी हैं, कौशल दिए हैं और माध्यम की ओर ध्यान देने का आदेश दिया है उन सभी को काम में लाओ और फिर दुआ करो। अगर इसके बिना है तो फिर दुआ कुछ भी लाभ नहीं देती) क्योंकि जब हम पहले उपकार से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे को कब अपने लिए उपयोगी और लाभ दायक बना सकेंगे।?

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 130-131 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

(यह भी अल्लाह तआला का दान है जो अल्लाह तआला ने कारण पैदा किए हैं और उनसे काम लेना, फिर दुआ करना, तब ही हमारे लिए उपयोगी हो सकता है।)

फिर इस बात की व्याख्या करते हुए कि कुदरत के कानून में दुआ की स्वीकृति के उदाहरण हैं आप फरमाते हैं कि

"उद्देश्य यह है कि कुदरत के कानून में दुआ की स्वीकृति के उदाहरण मौजूद हैं और हर ज़माना में ख़ुदा तआला ज़िन्दा नमूने भेजता है। इसीलिए उसने

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ

की दुआ शिक्षा फरमाई है। यह ख़ुदा तआला की इच्छा और कानून है और कोई नहीं जो इसे बदल सके। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ की दुआ से पाया जाता है कि हमारे कर्मों को पूर्ण और उत्तम कर (जो हमारे कर्म हैं उन्हें पूरा कर और जो उनकी छोर हो सकती है वहां ले जा) इन शब्दों पर ध्यान देने से मालूम होता है कि ज़ाहिरी तौर पर तो कुरआन की आयत के इशारा के रूप में यह दुआ करने का आदेश मालूम होता है। (ज़ाहिर यही है कि एक खुला संकेत है कि दुआ करो) सीधे पथ का निर्देश मांगने की शिक्षा है (इस ओर ही इशारा लग रहा है सीधे पथ पर निर्देशित अल्लाह तआला से मांगो) लेकिन इसके सिर पर اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ बता रही है कि इससे लाभ उठाएं अर्थात सीधे पथ के गंतव्यों के लिए नेक ताकतों से काम लेकर अल्लाह तआला की मदद को मांगनी चाहिए। (सीधे पथ पर चलने के लिए जो अल्लाह तआला ने शक्तियां दी हैं उन को काम में लाओ और अल्लाह तआला की मदद मांगो) अत: बाहरी माध्यमों को ध्यान में रखना आवश्यक है जो इसे छोड़ता है वह नेअमत का इनकार करने वाला है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 199 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप ने फरमाया कि

"कई बीमारियां ऐसी हैं कि अगर वे जीभ को लग जाएं तो वह अचानक काम करना छोड़ बैठती है(जीभ के बारे में पहले भी उदाहरण दिया है) यह रहीमियत है ऐसा ही दिल में विनम्रता तथा विनय की स्थिति रखी और सोचने और विचार की शक्तियां अन्तरात्मा की हैं। तो याद रखो हम इन ताकतों और शक्तियों को निलंबित छोड़ कर दुआ करते हैं तो यह दुआ भी उपयोगी और लाभदायक नहीं होगी क्योंकि जब पहले उपकार से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे से क्या लाभ उठाएंगे। इसलिए اِيَّاكَ نَعۡبُدُ से पहले اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ बता रहा है कि हम ने तेरे पहले उपकारों और शक्तियों को बेकार और बरबाद नहीं किया। याद रखो रहमानीत का गुण यही है कि वह रहीमयत के फ़ैज़ उठाने में योग्य बना दे इसलिए ख़ुदा तआला ने जो اُدۡعُوۡنِىۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ फरमाया यह केवल निरा शब्दाडंबर नहीं है बल्कि मानव श्रेय इसी को चाहता है। मांगना मानवीय विशेषता है और जो अल्लाह का नहीं (जो अल्लाह तआला की दुआ की स्वीकृति की तलाश में नहीं है) वह अत्याचारी है। दुआ एक ऐसी आनन्द दायक स्थिति है।" फरमाया कि "मुझे अफसोस है कि मैं किन शब्दों में इस रमणीय और आनन्द को दुनिया समझाओं। यह तो महसूस करने से ही पता लगेगा। संक्षेप में दुआ के लिए अनिवार्य तथ्यों में प्रथम यह ज़रूरी है कि अच्छे कर्म और विश्वास पैदा करें (नेक कर्म हों। वह कर्म हों जिन का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है और अपनी आस्था, अपना विश्वास मज़बूत करें।) क्योंकि जो व्यक्ति अपनी मान्यताओं को ठीक नहीं करता और अच्छे कर्म से काम नहीं लेता और दुआ करता है वह मानो ख़ुदा तआला का परीक्षण करता है। तो बात यह है कि اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ कि दुआ में यह उद्देश्य है कि हमारे कर्मों को पूर्ण और उत्तम कर और फिर यह कह कि صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ और भी स्पष्ट कर दिया, (खोल दिया) कि हम इस सीधे राह हिदायत चाहते हैं जो इनाम पाने वाले गिरोह की राह है। (ऐसे लोगों की राह हमें दे कि जिन पर तूने पुरस्कार किया हुआ है।) और फरमाया और मग़ज़ूब के रास्ते से बचा। (जिन पर तेरा क्रोध हुआ उनके रास्ते पर चलने से हमें बचा हमारे कार्य हमेशा ठीक रहें कोई ऐसी बात न हो जो अल्लाह तआला की आज्ञाओं के ख़िलाफ हो) फरमाया कि जिन पर बुरे कर्मों के कारण अल्लाह का अज़ाब आ गया और "अज़्ज़ाल्लीन" कह कर यह दुआ शिक्षा कि की इससे भी सुरक्षित रख कि तेरे समर्थन के बिना भटकते फिरें।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 199-200 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

हमें इस बात से भी सुरक्षित रख कि तेरा समर्थन हमें प्राप्त न हो। हम तेरी रहमानियत से लाभ न लें और इसके परिणाम स्वरूप फिर रहीमियत से भी लाभ न उठाने वाले हों और तेरा जो समर्थन है, तेरी मदद है, तेरी दया और कृपा है कि हम इस से खो जाएं और भटकते जाएं। अत: यह ज़ाल्लीन कहकर इस तरफ भी ध्यान दिला दिया।

फिर दुनिया वालों के इस विचार को खारिज फरमाते हुए कि अल्लाह तआला के लिये रोने धोने से कुछ लाभ नहीं मिलता। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद फरमाते हैं कि

"कुछ लोगों का यह विचार है कि अल्लाह तआला के समक्ष रोने धोने से कुछ नहीं मिलता। बिल्कुल ग़लत और झूठ है। (मिथ्य है।) ऐसे लोग अल्लाह तआला की हस्ती और उसकी कुदरत की विशेषताओं और समक्षताओं पर विश्वास नहीं रखते। अगर उन में वास्तविक ईमान होता तो वह ऐसा करने का साहस नहीं करते। जब कभी कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के सामने आया है और वह सच्ची तौबा के साथ लौटा है अल्लाह तआला ने हमेशा उस पर फज़ल कर दिया। यह किसी ने बिलकुल सच कहा है।(फ़ारसी शेर है।)

आशिक कि शुद कि यार बहालश नज़र न कुर्द
ए ख्वाजा दर्द नीस्त व गरना तबीब हस्त

(कि वह आशिक़ ही किया है कि महबूब जिसकी तरफ नज़र न करे। हे साहिब! हे बन्दे दर्द ही नहीं है वरना वैद्य तो मौजूद है। तेरे अंदर दर्द नहीं है। वैद्य मौजूद है। अपने अंदर दर्द पैदा करो अल्लाह तआला तो सुनता है।)

फरमाया "ख़ुदा तआला तो चाहता है कि उसके सम्मुख पवित्र दिल लेकर आ जाओ। केवल शर्त इतनी है कि यथा अवस्था अपने आप को बनाओ। (فَلۡيَسۡتَجِيۡبُوۡا لِىۡ पर पालन करो) और वह सच्चा परिवर्तन जो ख़ुदा तआला के निकट जाने में सक्षम बना देती है अपने अन्दर पैदा करके दिखाओ। मैं तुम्हें सच

सच कहता हूँ कि ख़ुदा तआला के अंदर अदभुत कुदरतें हैं और उसमें असीमित बरकते हैं मगर उनके देखने और पाने के लिए प्यार की आंख पैदा करो। अगर सच्चा प्रेम हो तो ख़ुदा तआला बहुत दुआएँ सुनता है (अत: ऐसा प्रेम अल्लाह तआला से पैदा करो जो दुआएँ सुनने वाला हो। अगर सच्चा प्यार होगा तो बहुत दुआएँ सुनता है।) और समर्थन भी करता है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 352-353 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

ख़ुदा तआला का सच्चा प्यार पाने के लिए आदमी को कैसा होना चाहिए जिसके परिणाम स्वरूप ख़ुदा तआला दुआएं भी सुने और अपनी निकटता भी व्यक्त करे। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं।

"शर्त यही है कि प्यार और ईमानदारी ख़ुदा तआला से हो। ख़ुदा का प्रेम एक ऐसी चीज़ है जो इंसान का तामसिक जीवन जला कर उसे एक नया और साफ इंसान बना देता है। (पवित्र कर देता है) उस समय वह वह कुछ (देखता) है जो पहले नहीं देखा था और वह कुछ सुनता है जो पहले नहीं सुनता था। अत: ख़ुदा तआला ने जो कुछ कृपा फज़ल तथा उपकार की मनुष्य के लिए तैयार की है उसे पाने और लाभ लेने के लिए क्षमताएं भी प्रदान कीं हैं (केवल चीज़ें नहीं बनाईं हमें क्षमताएं भी दी है कि उन का उपयोग करें और उनसे लाभ लें) यदि वह क्षमताएं तो प्रदान करता, लेकिन समान नहीं होता तब भी एक त्रुटि थी या अगर सामान तो होता लेकिन क्षमताएं न होती तो क्या लाभ था? मगर नहीं, यह बात नहीं है। उसने क्षमता भी दी और सामान भी प्रदान किया। जिस तरह एक तरफ रोटी का सामान पैदा किया तो दूसरी ओर आंख, जीभ, दांत और पेट दे दिया और जिगर और अंगों को काम में लगा दिया और इन सभी कार्यों का आधार आहार पर रख दिया।" (जिगर पेट अंतड़ियाँ यह सब चीज़ें हैं जो भोजन को पचाने के लिए आवश्यक हैं।) आप फरमाते हैं कि "अगर पेट के अंदर ही कुछ नहीं होगा तो दिल में खून कहाँ से आएगा। केलोस कहाँ से बनेगा। खाना जो साफ हो कर ख़ून का हिस्सा बनेगा बाकी जो गंद निकलेगा वह कैसे बनेगा।) इसी तरह से सबसे प्रथम उसने यह फज़ल है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस्लाम जैसा पूर्ण धर्म देकर भेजा और आप को ख़ात्मन्नबिय्यीन ठहराया और कुरआन शरीफ जैसी पूर्ण और ख़ातमुल किताब दे दी जिसके बाद क़यामत तक न कोई किताब आएगी और न कोई नया नबी नई शरीयत लेकर आएगा। फिर जो शक्तियां सोच और चिंता की हैं उनसे अगर हम काम न लें और ख़ुदा तआला की ओर कदम न उठाएं तो कितनी सुस्ती और आलस्य और कृतघ्न है। ध्यान करो कि अल्लाह तआला ने पहली सूरत में ही हमारे लिए कितना फज़ल के तरीके की राह बता दी।"

(इसलिए आदमी के लिए लाभ उठाने का तरीका यह है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसा नबी हमें दिया तो आप की सुन्नत पर चलने वाले हों। कुरआन जैसी किताब हमें दी तो इस आदेश का पालन करने वाले हों। फरमाया कि अल्लाह तआला ने पहली सूरत में ही हमारे लिए अर्थात सूरे फातिहा में कितना सुदृढ़ तरीके पर कृपा की राह बता दी है।) "इस सूरत में जिसका नाम ख़ातमुल किताब और उम्मुल किताब भी है स्पष्ट रूप से बता दिया है कि मानव जीवन क्या लक्ष्य है और इसे प्राप्त करने के लिए क्या तरीका है।? इय्ययाक नअबुदो मानो मानव प्रकृति की वास्तविक मांग और इच्छा है और वह इय्याक नसतईन पर प्राथमिकता दे कर यह बताया है कि पहले आवश्यक है कि जहां तक मनुष्य अपनी ताकत, हिम्मत और समझ में ख़ुदा तआला की सहमति की राहों को अपनाने में कोशिश और चेष्ठा करे और ख़ुदा तआला की दी गई शक्तियों से पूरा काम ले और उसके बाद फिर ख़ुदा तआला से इसकी पूर्ति और उपयोगी होने के लिए दुआ करे।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 353-354 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अल्लाह तआला की अनुभूति के अधिग्रहण के माध्यम क्या हैं? इस को स्पष्ट करते हुए आप फ़रमाते हैं

"यह सच्ची बात है خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا अर्थात मनुष्य कमज़ोर प्राणी है और अल्लाह तआला की कृपा और फज़ल के बिना कुछ भी नहीं कर सकता। (कृपा न हो तो इंसान कुछ नहीं कर सकता।) उसका अस्तित्व और उसकी परवरिश और अस्तित्व के सामान सब अल्लाह तआला की कृपा पर निर्भर हैं। मूर्ख है वह इंसान जो अपनी बुद्धि और ज्ञान या अपने धन दौलत पर गर्व करता है क्योंकि यह सब अल्लाह तआला का ही दान है वह कहाँ से लाया ? और दुआ के लिए यह ज़रूरी बात है कि मनुष्य अपनी निर्बलता और कमज़ोरी का पूरा ध्यान और कल्पना करे। जैसे-जैसे वह अपनी कमजोरी पर विचार करेगा उतना ही अपने आप को अल्लाह तआला की मदद का मोहताज पाएगा और इस तरह से दुआ के लिए उसके अंदर एक जोश पैदा होगा। (लोग कहते हैं दुआ के लिए उत्साह नहीं पैदा होता अपनी कमज़ोरी देखे अपनी विनम्रता देखे फिर प्यार की आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करे तो एक उत्साह पैदा होता है) फरमाया "जैसे इंसान जब मुसीबत में पीड़ित होता है और दु:ख या तंगी महसूस करता है तो बड़े ज़ोर के साथ पुकारता और चिल्लाता है और दूसरे से मदद मांगता है। इसी तरह अगर वे अपनी कमज़ोरियों और भूलूं पर विचार करेगा और अपने आप को हर क्षण अल्लाह तआला की मदद का मोहताज पाएगा तो उसकी रूह पूरे जोश और दर्द से व्याकुल होकर अल्लाह तआला के समक्ष गिरेगी और चिल्लाएगी और हे रब्ब हे रब्ब कहकर पुकारेगी। ध्यान से कुरआन को देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि पहली ही सूरत में अल्लाह तआला ने दुआ की शिक्षा दी है।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ

(सूरत अल्फातिहा 6-7) फरमाया कि "दुआ तब ही व्यापक हो सकती है कि वह लाभ और हित को अपने अंदर रखती हो और सारे नुकसानों और कष्टों से बचाती हो।" (दुआ वही सही है जो हर प्रकार के लाभ, मनुष्य को जो लाभ मिल सकता है या हित में जो बेहतर है वह अपने अंदर लिए हुए हो और नुकसानों और जो कष्ट पहुंच सकते हैं उनसे इसे बचाने वाली हो) तो इस दुआ में(اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ से लेकर وَ لَا الضَّآلِّيْنَ तक) दुआ में सभी बेहतरीन लाभ जो हो सकते हैं और संभव हैं वह इस दुआ में मांगे गए हैं और बड़ी बड़ी हानि पंहुचाने वाली चीज़ें जो मनुष्य को हलाक कर देती हैं इससे बचने की दुआ है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 411-412 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि इसमें जो सबसे बड़ी दुआएं की गई हैं वे सांसारिक दुआएं नहीं हैं धर्म की दुआ है। इसलिए अपनी दुआओं में हमें सबसे पहले अपने धर्म को बचाने की दुआ करनी चाहिए। जब इंसान यह करे तो अल्लाह तआला के नज़दीकी के दरवाज़ो खुलते हैं और फिर बाकी दुआएं स्वत: स्वीकार होती चली जाती हैं।

इसे आगे स्पष्टीकरण कहते हुए कि मूल दुआ धर्म की मज़बूती की दुआ है और यही अल्लाह तआला की निकटता और दुआओं की स्वीकृति का माध्यम बनती है। आप फरमाते हैं। اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ अर्थात मैं तौबा करने वाले की तौबा स्वीकार करता हूं। ख़ुदा तआला का यह वादा इस बात को मान्यता देता है कि सच्चे दिल से पश्चाताप करने वाला है। अगर ख़ुदा तआला की ओर से इस प्रकार की स्वीकारोक्ति न होती तो तौबा का स्वीकार होना एक मुश्किल बात होती। सच्चे दिल से जो स्वीकार किया जाता है इसका नतीजा यह होता है कि फिर ख़ुदा तआला भी अपने सभी वादे पूरे करता है जो उसने तौबा करने वालों के साथ किए हैं और उसी समय से एक प्रकाश की तजल्ली उसके दिल में शुरू हो जाती है। जब मनुष्य यह स्वीकार करता है कि सभी गुनाहों से बचूंगा और धर्म को दुनिया में प्राथमिकता रखूंगा।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 300 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अल्लाह तआला ने अपनी निकटता और दुआ की स्वीकृति के जो तरीके बताए हैं उस में सबसे उच्च माध्यम नमाज़ की स्थिति को बताया है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"नमाज़ का असली उद्देश्य और मेरुदण्ड दुआ ही है और दुआ अल्लाह तआला के कानून कुदरत के अनुसार है जैसे हम प्राय देखते हैं कि जब बच्चा रोता धोता है और व्याकुलता प्रकट करता है तो माँ कितनी व्याकुत होकर उसे दूध देती है उलूहियत और अबूदियत में इसी प्रकार का एक रिश्ता है जो हर व्यक्ति समझ नहीं सकता। जब इंसान अल्लाह तआला के दरवाज़े पर गिर पड़ता है और बहुत विनम्रता और विनय के साथ उसके सामने अपने हालात को प्रकट करता है और अपनी ज़रूरतों को मांगता है तो उलूहियत का रहम जोश में आता है और ऐसे व्यक्ति पर दया की जाता है। अल्लाह तआला की कृपा का दूध भी एक रोने को चाहता है। (अल्लाह तआला की कृपा का दूध अगर पीना है, उस की कृपा और दया से लाभ उठाना है तो उसके लिए भी विनम्रता विनय से रोना और चलाना होगा।) फरमाया कि "इसलिए उसके सामने रोने वाली आंख प्रकट करनी चाहिए।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 300 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो रमज़ान में जबकि प्राय ध्यान मस्जिद की ओर भी है अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत से नमाज़ अदा करने की ओर भी ध्यान है इसके साथ नफलों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए और फिर वह दुआएं जो धर्म को दुनिया में प्राथमिकता

देने और अल्लाह तआला की निकटता पाने के लिए वे हमें प्रथमत: करनी चाहिए। पहली दुआएं ही यही हैं बाकी दुआएं, सांसारिक दुआएं बाद में आनी चाहिए। हमारी सांसारिक आवश्यकताओं की दुआएं तो फिर अल्लाह तआला ज़रूरतें ख़ुद भी पूरी कर देता है।

इस समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ भी प्रस्तुत करता हूं जिसे इन दिनों में हमें विशेष रूप से करना चाहिए ताकि अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त हो। अल्लाह तआला के समक्ष आप ने यह दुआ की थी कि

"हे संसारों के रब्ब ! तेरे उपकारों का मैं शुक्र नहीं कर सकता। तो बहुत ही रहीम व करीम है और तेरे बिना प्रयत्न के मुझ पर उपकार है। मेरे गुनाहों को क्षमा कर ताकि में हलाक न हो जाऊँ मेरे दिल में अपनी पवित्र मुहब्बत डाल तो मुझे जीवन मिले और मेरी पर्दापोशी फ़रमा और मुझ से ऐसे कार्य करा जिन से तो राज़ी हो जाए। मैं तेरे कारण करीम के साथ इस बात से शरण चाहता हूँ कि तेरा प्रकोप मुझ पर वारिद हो। दया फरमा और दुनिया और आख़िरत की विपत्तियों से मुझे बचा कि प्रत्येक अनुग्रह तेरे ही हाथ में है। आमीन सुम्मा आमीन।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 235 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अल्लाह तआला करे कि हम दुआ की वास्तविकता को समझने वाले हों। यह रमज़ान हमें उन लोगों में शामिल करे और फिर उस पर स्थायी कायम रखे जिन के ख़ुदा तआला पर ईमान मज़बूत होते हैं। उस के आदेश को सुनते और मानते हैं और अपनी हर बात पर अल्लाह तआला की इच्छा को प्राथमिकता देते हैं। हमारे कार्य विशुद्ध रूप से अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार हों और हमारे विश्वास में पहले से बढ़कर मज़बूती पैदा हो। हम में अल्लाह तआला की सच्ची मुहब्बत पैदा हो। अल्लाह तआला हमें दुनिया और आख़िरत की विपत्तियों से भी बचाए।

नमाज़ के बाद दो नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा कि एक आदरणीय राजा ग़ालिब अहमद साहिब का है यह जमाअत के चिर सेवक और उर्दू के बड़े प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। शिक्षा विशेषज्ञ थे। उन्होंने सरकार की नौकरी की और पंजाब पाठ पुस्तक बोर्ड के चेयरमैन भी रहे हैं यह 4 जून 2016 ई को लाहौर में 88 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। गुजरात शहर में यह 1928 ई में पैदा हुए थे। उनके पिता हज़रत राजा अली मुहम्मद साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। उन्होंने 1905 ई में बैअत की और सिलसिला अहमदिया में शामिल हो गए। उनके पिता को कादियान में नाज़िर माल और नाज़िर आला के रूप में सेवा का अवसर मिला। राजा ग़ालिब साहिब के नाना मलिक बरकत अली साहिब थे और हज़रत मलिक अब्दुर्रहमान ख़ादिम साहिब जो ख़ालिद अहमदियत थे आप के मामों थे। लाहौर से उन्होंने मैट्रिक किया। फिर कादियान से एफ. ऐ और गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से साईकालोजी में मास्टर डिग्री ली और पहला स्थान भी हासिल किया। कवि, बौद्धिक शिक्षा विशेषज्ञ और साहित्य के आलोचक के रूप में देश के ज्ञान और साहित्य के क्षेत्रों में सम्मान की दृष्टि से पहचाने जाते थे। दैनिक अल्फज़ल के साथ घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी उनकी कविताएं और लेख उर्दू और अंग्रेज़ी में प्रकाशित होते रहे। उन्होंने अपनी नौकरी पाकिस्तान एयर फोर्स से शुरू किया। फिर शिक्षा विभाग पंजाब को 1962 ई में ज्वाइन किया फिर विभिन्न बड़े महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे। महासचिव और नियंत्रक मंडल मध्यवर्ती माध्यमिक शिक्षा पंजाब, चेयरमैन बोर्ड आफ इन्ट्रमीडियट सरगोधा चेयरमैन पंजाब पाठ पुस्तक बोर्ड और सलाहकार शिक्षा सरकार पंजाब उनकी स्पष्ट देश की सेवाएं हैं। जमाअत की सेवाओं का सिलसिला भी बहुत लंबा है। जमाअत अहमदिया ज़िला लाहौर में आप जनरल सैक्रेटरी, सैक्रेटरी शिक्षा और कई पदों पर सेवा कर चुके हैं। 1974 ई के बाद आप को जमाअत अहमदिया के प्रवक्ता के रूप में कई बार प्रेस कांफ्रेंसें और प्रेस रिलीज़ें और बयान जारी करने का मौका मिला। पत्र लिखने वाले थे। अख़बारों निजी बयान देने का मौका मिला। 1992 ई से 1997 ई निदेशक फज़ल उमर फाउंडेशन, 1974 ई से 1985 ई तक निदेशक तहरीक जदीद और इसके अतिरिक्त उपाध्यक्ष नासिर फाउंडेशन भी रहे। बड़े सरल स्वभाव और बड़े धीमे मिज़ाज के थे। ख़िलाफत से उनका बड़ा संबंध था और जमाअत के उहदेदारों का बड़ा आदर और सम्मान करते थे। अल्लाह तआला उनके माफी का व्यवहार करे। स्तर ऊंचा करे। उनकी औलाद नहीं थी एक गोद ली हुई बेटी थी। अल्लाह तआला उसे भी धैर्य और साहस प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा है आदरणीय मलक मुहम्मद अहमद साहिब जो वाक्फे ज़िन्दगी थे 6 मई 2016 ई को वफात पा गए। ये दोनों नमाज़ जनाज़ा पिछली बार पढ़ाने थे बस किसी कारण से रह गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत शेख फज़ल अहमद साहिब बटालवी रज़ि अल्लाह के बड़े बेटे थे। खुलफाए अहमदियत और ख़िलाफत की प्रणाली के साथ आज्ञाकारिता की भावना और बड़े प्यार और वफ़ा का संबंध रखते थे। सभी बच्चों को भी यही गुण अपनाने की नसीहत करते थे। जमाअत की प्रणाली के आज्ञाकारी, बहुत शरीफ़, मिलनसार, विनम्र रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करने वाले सहानुभूति करने वाला नेक इंसान थे। जीवन भर कई परिवारों को प्रायोजित किया। कुछ बच्चों की शिक्षा की ज़िम्मेदारी भी उठाई और जो वफात तक बड़े ढंग से निभाई। तहरीक जदीद दफतर प्रथम के पांच हज़ार मुजाहिदीन में शामिल थे। मस्जिदों के निर्माण और दूसरी तहरीकों में बड़ी उदारता से हिस्सा लेते थे। रबवा में ज़मीन का एक टुकड़ा भी, एक पलाट भी जमाअत को पेश किया। 20 अक्तूबर 1945 ई को आप ने वक्फ ज़िन्दगी किया पहले तो कहीं बाहर काम कर रहे थे। बहरहाल इसके बाद फिर वक्फ ज़िन्दगी करके आ गए और रबवा में निर्माण के क्षेत्र में 1949 ई के बाद से 1955 ई ईसवी तक सेवा की। 1955 ई के बाद से 1968 ईसवी तक वकालत तबशीयर में अधीक्षक के रूप में सेवा करते रहे। 1969 से 1982 ईसवी तक नायब अफसर अमानत सेवा की तौफ़ीक़ पाई। 1982 ई के बाद से 1986 ईसवी तक नायब वकील माल सानी सेवा की तौफ़ीक़ पाई। 1985 ई में रिटायर हुए और जून 1989 तक पुन: री अंपलाई होकर सेवा करते रहे। 1986 के बाद से 89 ईसवी तक बतौर उप वकील तामील व तंफीज़ सेवा करते रहे। उनकी सेवाओ का 47 साल का समय है। फिर आप अपने बच्चों के पास जर्मनी आ गए थे। बड़ा इबादत करने वाले थे। तिलावत कुरान करीम करने वाले, हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का बड़ा व्यापक अध्ययन था। ख़ुदा तआला की कृपा से मूसी थे। उनके पीछे रहने वालों में दो बेटे और चार बेटियां हैं। लईक ताहिर साहिब हमारे मुबल्लिग़ सिलसिला उनके छोटे भाई हैं और यहाँ अल्फज़ल इंटरनेशनल में वक्फ ज़िन्दगी कार्यकर्ता महमूद उनके छोटे बेटे हैं। अल्लाह तआला उनसे माफी और दया का व्यवहार करे और उनके वंश को और पीढ़ियों को ईमानदारी व वफा से जमाअत के साथ और ख़िलाफत के साथ संबंध रखने की शक्ति प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

मरियम शादी फंड

एक मुहब्बत का है दरिया मरियम शादी फंड
दरिया वह जो खत्म न होगा मरियम शादी फंड
हर इक मुफलिस, ज़ादी विदा हो गई इज़्ज़त से
इक बा इज़्ज़त रोशन मरियम शादी फंड

उजड़े पजड़े लोगों पर रखे शफकत का हाथ
खामोशी से करे किफालत मरियम शादी फंड
ऐसी कोई मिसाल नहीं है इस दुनिया के पास
मां का प्यार और बाप कि शफकत मरियम शादी फंड

रब्ब तआला का इहसाँ है मरियम शादी फंड
भाई पिता बहन है माँ है मरियम शादी फंड
एक समुद्र जिस में गिरेंगे दरिया "नदी" खाल
सब दूर का यह दरमाँ है मरियम शादी फंड

शफकत की यह बारिश बरसेगी हर मौसम में
इसका फ़ैज़ रहेगा जारी मरियम शादी फंड
हर दुल्हन के सिर ढक जाएगा चादर से
कुद्सी साया ख़ुद्दारी मरियम शादी फंड

अब्दुल करीम कुद्सी

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 21 July 2016 Issue No. 20

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

पर अड़े तो उसका इलाज यह है कि किसी और काम में उसे लगा दिया जाए और ज़िद की वजह मालूम करके उसे दूर किया जाए।

(17) बच्चे से शिष्टाचार से बात करनी चाहिए। बच्चा नकल करता है। अगर आप उसे तू कह कर संबोधित करेंगे। तो वह भी तू कहेगा।

(18) बच्चे के सामने झूठ, अहंकार और सख्त बात आदि न करनी चाहिए। क्योंकि वे भी ये बातें सीख लेगा। आमतौर पर माता-पिता बच्चे को झूठ बोलना सिखाते हैं। मां ने बच्चे के सामने कोई काम होता है लेकिन जब पिता पूछता है तो कह देती है मैंने नहीं किया। इससे बच्चे में भी झूठ बोलने की आदत पैदा हो जाती है। मेरा यह मतलब नहीं कि बच्चे के अभाव में माता-पिता यह काम करें बल्कि यह मतलब है कि जो हर समय इन बुराइयों से बच नहीं सकते वे कम से कम बच्चों के सामने ऐसे कार्य न करें। ताकि बीमारी आगे पीढ़ी को भी पीड़ित न करे।

(19) बच्चे को हर प्रकार के नशे से बचाया जाए। नशों से बच्चे की नसें कमज़ोर हो जाते हैं इसलिए झूठ की भी आदत पैदा होती है और नशा पीने वाला अंधाधुंध अनुकरण का आदी हो जाता है। एक व्यक्ति हज़रत ख़लीफा अव्वल का रिश्तेदार था। वह एक बार एक लड़के को ले आया और कहता था। उसे भी अपने जैसा ही बना लूंगा। वह नशा आदि पीता और धर्म से कोई संबंध नहीं रखता था। हज़रत ख़लीफा अव्वल ने उसे कहा तुम तो ख़राब हो चुके हो उसे क्यों ख़राब करते हो। मगर वह रुका नहीं । एक अवसर पर आप ने इस लड़के को अपने पास बुलाया और उसे समझाया कि तुम्हारी बुद्धि क्यों मारी गई है। इसके साथ फिरते हो। कोई काम सीखो। आपके समझाने से वह लड़का उसे छोड़ कर चला गया। मगर कुछ समय बाद वह एक और लड़का ले आया। और आकर हज़रत ख़लीफा अव्वल से कहने लगा। अब यह ख़राब करूं तो जानूं। उसके निकट यही बिगाड़ना था कि उसके पास से निकाल दिया जाए। हज़रत ख़लीफा अव्वल ने बहुत इस लड़के को समझाया और कहा कि मुझ से रुपया ले लो और कोई काम करो। मगर उसने न माना। आख़िर आप ने उस व्यक्ति से पूछा उसे तुम ने क्या किया है तो वह कहने लगा। उसको नशा पिलाता हूँ और इसलिए में हिम्मत ही नहीं रही कि मेरा अनुकरण छोड़ सके। अत: नशा से अनुकरण की शक्ति मारी जाती है।

झूठ सबसे ख़तरनाक रोग है क्योंकि उसके पैदा होने के माध्यम बहुत सूक्ष्म हैं इस बीमारी से बच्चे को विशेष रूप से बचाना चाहिए। कुछ ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से यह रोग अपने आप ही बच्चा में पैदा हो जाता है। जैसे यह कि बच्चे का दिमाग़ तो बहुत ऊंची उड़ान पर आधारित होता है वह जो बात सुनता है आप उस की एक तथ्य बना लेता है। हमारे बहन बचपन में रोज़ एक लंबा सपना सुनाया करती थीं। हम हैरान होते कि रोज़ उसे कैसे सपने आ जाती है। अंत पता चला कि सोने के समय जो विचार करती थीं वह उसे सपना समझ लेती थीं। तो बच्चा जो सोचता है उसे घटना विचार करने लगता है और धीरे धीरे उसे झूठ की आदत पड़ जाती है। इसलिए बच्चे को समझाते रहना चाहिए कि विचार और बात है और घटना और बात है। अगर विचार की वास्तिकता बच्चा के मन में अच्छी तरह बिठा दी जाए तो बच्चा झूठ से बच सकता है।

(20) बच्चों को अलग बैठकर खेलने से रोकना चाहिए।

(21) नंगा होने से रोकना चाहिए।

(22) बच्चों को आदत डालनी चाहिए कि वे हमेशा अपनी ग़लती को स्वीकार करें और उसके तरीके हैं:

(1) उनके सामने उन के अपराधों पर पर्दा नहीं डाला जाए (2) यदि बच्चा से ग़लती हो जाए तो इससे ऐसे सहानुभूति करें कि बच्चे को यह महसूस हो कि मेरा कोई भारी नुकसान हो गया है जिसकी वजह से ये लोग मुझ से सहानुभूति कर रहे हैं। और उसे समझाना चाहिए कि देखो इस गलती से यह नुकसान हो गया है। (3) भविष्य में ग़लती से बचाने के लिए बच्चे से इस तरह बात की जाए कि बच्चे को महसूस हो कि मेरी ग़लती के कारण माता-पिता को चोट उठानी पड़ी है। जैसे बच्चा जो नुकसान हुआ हो वह उसके सामने उसकी क़ीमत आदि निभानी इससे बच्चे में यह विचार पैदा होगा कि नुकसान करने का परिणाम अच्छा नहीं होता। प्रायश्चित बहुत गंदा विश्वास है मगर मेरे निकट बच्चा की इस तरह से प्रशिक्षित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। (4) बच्चे को डांट अलग ले जा कर करनी चाहिए।

(23) बच्चे को कुछ माल का मालिक बनाना चाहिए। इससे बच्चे में यह गुण पैदा होती हैं:

(1) दान देने की आदत। (2) कम खर्च करने की आदत। (3) रिश्तेदारों की सहायता करना। जैसे बच्चे के पास तीन पैसे हैं तो उसे कहा जाए एक पैसा की कोई चीज़ लाओ और अन्य बच्चों के साथ मिलकर खाओ। एक पैसे का कोई खिलौना ख़रीद लो। और एक पैसा दान में दे दो।

(24) इसी तरह बच्चों का संयुक्त माल हो। जैसे कोई खिलौना दिया जाए तो कहा जाए। यह तुम सब का है। सब इसके साथ खेलो। और कोई ख़राब न करे। इस तरह राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा पैदा होती है।

(25) बच्चे को शिष्टाचार और सभ्यता के नियम सिखाते रहना चाहिए।

(26) बच्चे कसरत का भी और उसे मेहनती बनाने का भी ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि यह बात सांसारिक विकास और आत्मा के सुधार दोनों में समान रूप से उपयोगी है।

नैतिकता और आध्यात्मिकता की जो परिभाषा मैं ऊपर वर्णन कर चुका हूँ उसके अनुसार वही बच्चा प्रशिक्षित कहलाएगा जिसमें निम्नलिखित बातें हों: (1) व्यक्तिगत रूप से चरित्रवान हो और उसमें अध्यात्मिकता हो (2) दूसरों के ऐसा करने की योग्यता रखता हो। (3) कानून, सिलसिला के अनुसार चलने की योग्यता रखता हो। (4) अल्लाह तआला से विशेष प्रेम रखता हो जो सब मुहब्बतों पर हावी हो।

पहली बात की मानदंड यह है कि (1) जब बच्चा बड़ा हो तो शरियत के मामलों की शाब्दिक व व्यावहारिक रूप से पाबन्दी करे। (2) उसकी इच्छा शक्ति मज़बूत हो ताकि भविष्य में फित्ना में न पड़े (3) उस की अपनी ज़िन्दगी की आवश्यकताओं का ध्यान रखना और जान बचाने की क्षमता रखना। (4) अपने माल और संपत्ति को बचाने की योग्यता का होना और इसके लिए कोशिश करना।

दूसरी बात का मानदंड यह है: (1) नैतिकता का अच्छा नमूना पेश करे। (2) दूसरों के प्रशिक्षण और प्रचार में भाग ले। (3) अपने माध्यमों को नष्ट न होने दे बल्कि उन्हें अच्छी तरह प्रयोग करे जिससे जमाअत और धर्म को अधिकतम लाभ पहुंचे।

तीसरी बात अर्थात सिलसिला के कानून के अनुसार चलने की शक्ति रखने की यह गुणवत्ता है: (1) अपनी सेहत का ख्याल रखने वाला हो। (2) जमाअत के माल और अधिकारों का रक्षक हो। (3) कोई ऐसा काम न करे जिससे दूसरों के अधिकार को हानि पहुंचे। (4) राष्ट्रीय इनाम और सज़ा को सहन करने के लिए तैयार हो।

चौथी बात का मानदंड यह है: (1) अल्लाह तआला के कमाल का शौक और शिष्टाचार हो (2) ख़ुदा तआला के नाम उसे हर हालत में शिष्टाचार और स्थिर बना दिया। (2) दुनिया में रहते हुए दुनिया से पूर्ण रूप से अलग हो। (4) ख़ुदा के प्रेम के चिन्ह उस के अपने अस्तित्व में पाए जाएं।

(मिनहाजुत्तालेबीन पृष्ठ 56 से 65)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad